"श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन"

-: अनुक्रमणिका :-

प्रथम अध्याय : नारी विमर्श की पूर्व पीठिका :

1.1 पूर्व पीठिका।

1.2 निष्कर्ष।

1.3 संदर्भानुक्रम।

द्वितीय अध्याय : श्यौराज सिंह बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 श्यौराज सिंह बेचैन का व्यक्तित्व।

2.2 श्यौराज सिंह बेचैन का कृतित्व।

2.3 श्यौराज सिंह बेचैन का रचनात्मक दृष्टिकोण।

2.4 निष्कर्ष।

2.5 संदर्भानुक्रम।

***तृतीय अध्याय :* श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी**

3.1 श्यौराज सिंह बेचैन की कविता में नारी।

3.2 श्यौराज सिंह बेचैन की कहानी में नारी।

3.3 श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा में नारी।

3.4 श्यौराज सिंह बेचैन के उपन्यास और अन्य साहित्य में नारी।

3.5 निष्कर्ष।

3.6 संदर्भानुक्रम।

चतुर्थ अध्याय : **श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष**

4.1 श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में पारिवारिक संघर्ष।
4.2 श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में सामाजिक संघर्ष।
4.3 श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में आर्थिक संघर्ष।
4.4 श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में शैक्षिक संघर्ष।
4.5 श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में राजनीतिक संघर्ष।
4.6 *निष्कर्ष।*
4.7 संदर्भानुक्रम।

पंचम अध्याय : श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना :-

5.1 कविता में नारी चेतना।
5.2 कहानी में नारी चेतना।
5.3 आत्मकथा में नारी चेतना।
5.4 उपन्यास में नारी चेतना।
5.5 आलोचना में नारी चेतना।
5.6 निष्कर्ष।
5.7 संदर्भानुक्रम।

षष्ठ अध्याय : श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य की अंतर्वस्तु और शिल्प :-

6.1 भाषा शैली ।
6.2 लोकोक्तियां और मुहावरे।
6.3 प्रतीक एवं बिम्ब।
6.4 तत्सम और तद्भव शब्द।
6.5 देशज और विदेशज शब्द।
6.6 निष्कर्ष।
6.7 संदर्भानुक्रम।

<u>सप्तम अध्याय : उपसंहार:-</u>

- सार - संक्षेप।
- उपलब्धि।
- भविष्यत् संभावनाएं।

<u>ग्रंथानुक्रमणिका:-</u>

- *परिशिष्ट - /1/ उपजीव्य ग्रंथों की सूची।*
- *परिशिष्ट - /2/ सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची।*
- *परिशिष्ट - /3/ कोश ग्रंथ इत्यादि।*
- *परिशिष्ट -/4/ पत्र - पत्रिकाएं।*
- *परिशिष्ट - /5/ इंटरनेट माध्यम।*

नारी विमर्श की पूर्व पीठिका जिसके अंतर्गत नारी विमर्श की चर्चा की गई है जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि भारतीय साहित्य और भाषा साहित्य में नारी विमर्श के लिए कब से आवाज बुलंद की जाने लगी थी जिसके कारण स्त्री जाति में विरोध के स्वर उत्पन्न होना शुरू हो जाता है प्रस्तुत अध्याय में स्त्री विमर्श किस समय और किन कारणों से तथा किन देशों में हुआ इसका विस्तृत वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष के अंतर्गत यह बताने का प्रयास किया गया है कि नारी विमर्श आज भी समाज में देखा और सुना जा सकता है क्योंकि आज भी वह उन्हीं समस्याओं से घिरी हुई हैं।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

श्यौराज सिंह बेचैन बेचैन का जन्म 5 जनवरी 1960 को नरौली जिला बदायूं उत्तर प्रदेश में हुआ था उनके पिता का नाम श्री राधेश्याम तथा माता का नाम श्रीमती सूरजमुखी था पिता एक प्रसिद्ध जूता कारीगर थे। बैचेन जी की जब उम्र 4 वर्ष की थी तभी इनके पिता का देहांत हो गया था ।

श्यौराज सिंह बेचैन का कहानी संग्रह हाथ उग ही आते हैं ,मेरी प्रिय कहानियां ,भरोसे की बहन, कहानी संग्रह है भोर के अंधेरे में, चमार की चाय ,क्रौंच हूं, नई फसल। शोधार्थी ने अपने शोध में इसका विस्तृत वर्णन किया है।

बेचैन जी कविताएं लिखते छात्र जीवन से ही लोगों के बीच में प्रसिद्ध होने लगे थे उसी समय यानी छात्र जीवन से ही है बाल सभा के अध्यक्ष रहे और उसके पश्चात चंदौसी में स्नातक करने गए तो ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन के जिला कमेटी के अध्यक्ष पद पर भी रहे। जिसका वर्णन मैने अपने शोध मैं प्रस्तुत किया है।

अध्याय के अंत में मैंने श्यौराज सिंह बेचैन के व्यक्तिव कृतित्व एवं उनके रचनात्मक कौशल को प्रस्तुत किया है तथा इस अध्याय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है एवं अध्याय का समापन किया है।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

इस अध्याय में ***श्यौराज सिंह बेचैन*** चयन के साहित्य में महिला पात्रों का वर्णन किया गया है जो साहित्य की परिधि में रखकर देखा गया है वह अपनी साहित्य रूपी दर्पण में जिन दलित आदिवासी एवं असहाय महिलाओं का चित्रण किया है वह सभी भारतीय समाज के केंद्र में कभी-कभार ही उनका चित्रण हमारे सामने आता है जबकि सभ्य समाज में ऐसे पात्रों को साहित्य की सीमा से बाहर का पात्र माना जाता है लेकिन बेचैन के समग्र साहित्य में ऐसे पत्रों का बखूबी चित्रण किया गया है।

अध्याय के अंत में मैंने श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी को दर्शाते हुए पुष्टि तथ्यों के साथ नारी से संबंधित उदाहरण को प्रस्तुत किया है तथा इस अध्याय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है एवं अध्याय का समापन किया है।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

इस इस अध्याय में ***श्यौराज सिंह बेचैन*** जी के साहित्य में जिन महिला पात्रों का वर्णन किया गया है उन सभी का सामाजिक आर्थिक पारिवारिक शैक्षिक और राजनीतिक संघर्ष के क्षेत्र में जो उनका व्यवहार रहा है शोधार्थी उन गुणों को निखारने का प्रयास इस अध्याय में किया है जीवन रूपी नया में जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से बेचैन के साथ रहा है या उनके साहित्य की परिधि में आने वाली समस्त महिलाओ का वर्णन किया गया है

शोध - प्रबंध के इस अध्याय में श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना ' इस अध्याय में श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य के क्षेत्र में जिन महिलाओं का प्रत्यक्ष एवम परोक्ष रुप से उनके जीवन के संघर्ष में उनकी चेतना का जो मूल गुण है उसे समाज में निखारने का प्रयास किया गया है। उनके पात्रों द्वारा जो चेतना और जागरूकता है उसे पाठक तक ले जाता है। भारतीय साहित्य में महिलाओं की योग्यता को हमेशा कम कर आंका गया है या साहित्य के क्षेत्र में वे हाशिए पर छोड़ दिया गया है। उनके गुणों को दबाया गया है जिनका वर्णन यहां मैने किया है।

अध्याय के अंत में मैंने श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष को दर्शाते हुए पुष्टि तथ्यों के साथ नारी संघर्ष से संबंधित उदाहरण को प्रस्तुत किया है तथा इस अध्याय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है एवम अध्याय का समापन किया है।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

शोधार्थी ने अपने इस शोध प्रबंध में श्यौराज सिंह बेचैन जी द्वारा रचित कविताओं में नारी चेतना को प्रस्तुत किया है जिसमें उनकी माता जी की परिस्थिति तथा लेखक की सगी बहन की चेतना तथा समाज में रह रहे हजारों बच्चों की परिस्थितियों में उसकी चेतना का चित्र शोधार्थी ने प्रस्तुत किया है।

लेखक की समग्र कहानियों में विद्यमान नारी की आधुनिक तथा पारंपरिक चेतना को शोधार्थी ने दर्शाया है इनकी कई कहानियां जैसे भरोसे की बहन, मेरी प्रिय कहानियां, हाथ तो उग ही आते हैं। आदि कहानियां जिसमें लेखक ने अपनी आप बीती के साथ साथ समाज में घटित घटनाओं में नारी की चेतना को बताया है जिसे शोधार्थी ने नारी पात्रों की चेतना को अपने शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किया है।

इसके पश्चात् इस अध्याय में मैने बेचैन जी की आत्मकथा में व्याप्त नारी चेतना को प्रस्तुत किया है जिसमें इनकी माता जी की चेतना के साथ साथ यादव समाज की मासाब की पत्नी बुआ की चेतना को दर्शाया है तथा साथ ही इनके इस साहित्य की गौण नारी पात्रों की चेतना को भी प्रस्तुत किया है। इनके इस साहित्य की नारी चेतना के कई भाग हैं जिसमें हमें नारी की चेतना दिखलाई देती है जो इस प्रकार हैं:- जीवित बचा स्वराज, भाई साहब: एक प्रेरक पाठ, यहां एक मोची रहता था, बगुला भक्ति, घर बहन माया का ब्याह आदि।

आत्मकथा में नारी चेतना के बाद शोधार्थी ने इनके उपन्यास में नारी चेतना को खोजना आरंभ किया परंतु इनके उपन्यास अभी अप्रकाशित ही हैं परंतु इनके अप्रकाशित उपन्यासो के संदर्भ में मैने लेखक से मिल के जाना जिसमे इन्होंने अपने इस साहित्य में नारी चेतना के आधुनिक स्वरूप को रखा है जिसका विस्तृत वर्णन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में किया है।

इसके पश्चात् शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध में लेखक की आलोचनात्मक रचना दलित साहित्य और सामाजिक न्याय, उत्तर सदी के कथा साहित्य में दलित विर्मश(आलोचना), सामाजिक न्याय और दलित साहित्य, उपन्यास साहित्य में दलित समस्या एवं समाधान(आलोचना), स्त्री विर्मश और पहली दलित शिक्षिका, फूलन की बारहमासी, साहित्य समाज के प्रश्न और दलित चेतना, दलित दखल आदि जिसमे नारी चेतना का बहुत ही सफल चित्र प्रस्तुत किया है जिसका विस्तृत रूप से वर्णन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में किया है।

अध्याय के अंत में मैंने श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना को दर्शाते हुए पुष्टि तथ्यों के साथ नारी चेतना से संबंधित उदाहरण को प्रस्तुत किया है तथा इस अध्याय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है तथा अध्याय का समापन किया है।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

शोध प्रबंध के इस अध्याय ' श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य की अंतर्वस्तु और शिल्प ' है इस अध्याय में बेचैन जी के साहित्य का जो केन्द्र बिंदु रहा है उसका वर्णन किया गया है लेखक द्वारा जो साहित्य के क्षेत्र में परिवर्तन का आगाज़ है शब्द , चयन, सुंदर भावानुकूल एवं काव्योचित है बेचैन जी का काव्य गीतकाव्य कहा जा सकता है क्योंकि इनकी कई कविताएं गेय रुप में हैं। इसमें उनकी मुख्य शैलियां चित्र शैली और प्रगति शैली को अपनाया गया है।

तत्पश्चात् आत्मकथाओं में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख भाषा शैली के बारे में इस शोध प्रबन्ध में बताया गया है। प्रत्येक भावों को अभिव्यक्त करने की अपनी एक विशेष शैली होती है। शैली से तात्पर्य अपनी बात को कहने का ढंग शैली शब्द का अंग्रेजी भाषा में अर्थ है स्टाइल शैली शब्द के अन्य अर्थ-रीति, काम करने का ढंग, तरीका, नियम आदि। संस्कृत काव्य शास्त्र में रीति-सम्प्रदाय' के माध्यम से शैली शब्द भाषा। एक ही घटना या दृश्य को देखकर उसकी व्याख्या करने की शैली भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की भिन्न होगी, यही भिन्नता कथा में शुष्कता या सरसता ला सकती है।

साहित्य में प्रत्येक विधा के अभिव्यक्तिकरण की अपनी एक शैली होती है। विशेष रूप से आत्मकथा की विशिष्ट शैली है। आत्मकथा का प्रारम्भ पद्म शैली में हुआ था। बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में पद्म शैली का का प्रयोग किया है तथा आधुनिक काल में यह गद्य शैली में लिखा जा रहा है। जिसका प्रयोग बेचैन जी ने अपने साहित्य में किया है।

इसके आगे शिल्प का अर्थ एवं स्वरूप का वर्णन किया गया है। भारतीय जीवन दर्शन में अध्यात्मपरक तत्वों का संनिवेश के कारण यहां के निवासियों की प्रवृति सनातन काल से ही ऐसी रही है कि किसी भी श्रेष्ठ रचना को गौरव प्रदान करने के निमित उसके उद्भव का संबंध सहज ही किसी न किसी दिव्य शक्ति अथवा दिव्य पुरुष के साथ स्थापित किया जाता रहा है। परिणामत उसके आरंभ और विकास विषयक वास्तविकता का पता लगाना दुरूह कार्य हो जाता है। आज का बुद्धिवादी अलोचक भी कदाचित इसीलिए इस प्रकार की आस्थाओं का अभ्यासी न होने के कारण उनकी एकांत उपेक्षा कर डालता है। यह प्रवृति अपने आप में अतिवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं । शिल्प का जन्म तो उस रूप में से ही हो गया था, जब मनुष्य के हृदय में निर्माण की भावना का जागरण और उसके पश्चात् वस्तु-विशेष के रूप में उस भावना की अभिव्यक्ति हुई। 'शिल्प' शब्द 'शील' धातु में 'प' प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'शील' धातु का अर्थ है ध्यान करना, पूजन करना, अर्चन करना, अभ्यास करना। 'प' का प्रयोग प्रायः पीने वाले के अर्थ में होता है। इस दृष्टि से शिल्प का अर्थ ध्यान पा अभ्यास को पीने वाला होगा। शिल्प की परिभाषा एवं स्वरूप - प्रत्येक रचना भाषा के माध्यम से विशेष रचनात्मक रूप लेकर अविष्कृत होती है। प्रत्येक साहित्यिक रचना के रचनात्मक रूप का संबंध शिल्प से है। शिल्प किसी वस्तु के रचना विधान से संबद्ध होता है। कवि का अनुभव सामान्य नहीं होता, बल्कि विशिष्ट होता है। वह भाषा के विभिन्न आयामों जैसे बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि को तलाशता है जिन्हें शिल्प विधान के अंतर्गत रखा जाता है। जिसको मैने पुष्टि तथ्यों सहित अपने शोध में प्रस्तुत किया है।

इस अध्याय में लेखक ने लोकोक्ति तथा मुहावरों का बेचैन जी के साहित्य में किस तरह से वर्णन किया गया है इसका वर्णन शोधार्थी ने पुष्टि तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है। बेचैन जी ने अपने साहित्य में भाषा के सामर्थ्य को बढ़ाने वाले उपकरणों में मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। जिस कारण यह पात्रों के कथन से मेल

खाते हैं। किसी भी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिए किया जाता है। मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में विशेष होता है, अलग नहीं। मुहावरा अपना असली रूप कभी नहीं बदलता कार्टून चरित्रों की तरह से सदैव एक से रहते हैं अर्थात् उसे पर्यायवाची शब्द में अनुदित नहीं किया जा सकता है। लेखक ने मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग पात्रों एवं स्थिति के अनुकूल किया है। जिस कारण वह पात्रों के कथन से मेल खाते हैं, उनकी स्थिति के अनुकूल ही मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया जा रहा है। मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से वाक्य का भाव सौन्दर्य और अर्थ गंभीरता बढ़ जाती है। बेचैन जी ने अपनी आत्मकथाओं में मुहावरों का बहुलता से प्रयोग किया है। जिसका पुष्टि तथ्यों सहित शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में विस्तृत रूप में वर्णन किया है।

इस अध्याय में प्रतीक योजना के बारे में बताया गया है। प्रतीक शब्द का अंग्रेजी अर्थ 'सिम्बल' है। किसी शब्द, चिह्न, ध्वनि, संकेत अथवा वस्तु द्वारा किसी अप्रस्तुत वस्तु का बोध करना प्रतीक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रतीक एक शब्द चिह्न है जिसमें किसी अदृश्य वस्तु का स्पष्ट भाव का बोध हो जाता है। उदाहरण सुन्दरता के लिए यदि चांद का उपमान दिया जाये। तो चांद प्रतीक कहलाता है सामाजिक मान्यता प्राप्त है। चांद के माध्यम से अदृश्य वस्तु की सुन्दरता का अनुमान लगाया जा सकता है। विवाहिता स्त्री द्वारा प्रयोग किये जाने वाले आभूषण उदाहरण बिछुएँ, मंगलसूत्र आदि ये सभी उसके सुहाग का प्रतीक हैं। गले में लटका क्रास व्यक्ति के ईसाई होने का प्रतीक है। राष्ट्र के सूचक चिह्न उदाहरण - राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत आदि ये सभी हमारे राष्ट्र के प्रतीक हैं जो अगोचर या अप्रस्तुत को प्रत्यक्ष करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मनुष्य अपने सामाजिक, धार्मिक तथा व्यवहारिक जीवन में प्रतीकों का बहुत ही शक्तिशाली माध्यम है। मनोवैज्ञानिक प्रतीकों के माध्यम से ही अचेतन मन की परतों को खोलने का प्रयास बेचैन जी अपने साहित्य में करते हैं। जिसका वर्णन मैने अपने शोध प्रबन्ध में विस्तृत रूप से किया है।

भाषा की अभिव्यक्ति में बिम्ब की बहुत अधिक आवश्यकता है। अभिव्यक्ति के माध्यमों में जहां भाषा की अहम् भूमिका है वहीं बिम्ब भाषा को जीवंत और सम्प्रेषण के लिए अति आवश्यक है। बिम्ब केवल चित्र नहीं होते अपितु कोरी चित्रात्मकता से बढ़कर संवेदनात्मक चित्र होते हैं अर्थात् किसी भी शाब्दिक रूप से ऐसा वर्णन करना जिसमे वह प्रत्यक्ष प्रतीत हो, बिम्ब कहलाता है।

बिम्ब शब्द को अंग्रेजी भाषा में इमेज(image) कहा जाता है। बिम्ब का अर्थ है चित्र, कल्पना चित्र, शाब्दिक - चित्र खींचना। अर्थात् जब किसी घटना का वर्णन इस प्रकार किया जाए कि सारा दृश्य आंखों के सामने प्रत्यक्ष अनुभूत हो ।

उद्भव के आधार पर बिम्ब दो प्रकार के होते हैं। स्मृति जन्य तथा कल्पित या स्वरचित । स्मृति जन्य बिम्ब में पूर्वदृष्ट वस्तुओं अथवा दृश्यों की स्मृति सम्बन्धी पूर्व संचित अवशेष होते हैं जो समय- समय पर जाग्रत होते रहते है। उदाहरण अपने किसी अभिन्न मित्र की याद आते ही दृश्य बिम्ब के रूप में उसकी छवि, श्रवण बिम्ब के रूप में उसकी आवाज आदि की प्रतिमाएं हमारे मन में तुरन्त जाग्रत हो उठती है। कतिपय बिम्ब स्वाचित होते हैं। यह कल्पना के संयोजन से संयोजित होकर प्रतिमा निर्माण में सहायक होते हैं। अपने साहित्य में लेखक ने ऐसे जीवन्त बिम्बों का प्रयोग अनुभव हुआ है। जिससे समस्त घटना को पाठक अपने आस पास घटित होते हुएअनुभव करता है तथा उसे ऐसा लगता है की वो उस कहानी का एक हिस्सा है।

तत्सम दो शब्दों तत + सम से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है उसके समान अर्थात संस्कृत के समान। हिंदी में अनेक शब्द संस्कृत से सीधे आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं अर्थात जिन शब्दों को संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन अथवा बदलाव के उपयोग किया जाता है उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। इसमें ध्वनि परिवर्तन भी नहीं होता है।

सामान्यतः संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जिनमें मात्रा, वर्ण में आंशिक परिवर्तन होकर एक सरल रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं तो ऐसे शब्दों को तद्भव शब्द है। कहा जाता उदाहरण के लिए सुन्दर पंखों वाले पक्षी के लिए 'मयूर' शब्द का प्रयोग संस्कृत में होता है किन्तु हिन्दी में इसी पक्षी के लिए 'मोर' शब्द का प्रयोग होता है। इस तह 'मयूर' संस्कृत का शब्द है और जब इस शब्द का प्रयोग हिन्दी में ज्यों का त्यों होता है तो इसे

'तत्सम' शब्द कहते हैं। किन्तु 'मयूर' शब्द में 'म' में 'ओ (ो) की मात्रा लगाकर एवं 'यू' को हटाकर अर्थात एवं प्रकार का आंशिक परिवर्तन करके 'मोर' शब्द का प्रयोग यहाँ नए रूप में प्रयुक्त हुआ है इसलिए 'मोर' शब्द तद्भव है।

तद्भव शब्द का विश्लेषण (शाब्दिक अर्थ) - तद्भव शब्द दो शब्दों के संयोजन से बना है - तत् भव । जहाँ 'तत' का अर्थ है 'उससे' एवं 'भव' का अर्थ है 'उत्पन्न' । इस प्रकार तद्भव शब्द का अर्थ होगा- 'उससे (संस्कृत से उत्पन्न अर्थात ऐसे शब्द जो संस्कृत शब्दों से उत्पन्न हुए हैं उन्हें तद्भव कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर (बिगड़कर) हिन्दी में आये हैं वे तद्भव कहलाते हैं। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए, हिन्दी में आये हैं। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आये हैं. परन्तु देशकाल के प्रभाव से विकृत (बिगड़ हो गये हैं, जिससे उनके मूल रूप का पता नहीं चलता।

अधिकांश भाषाविद तद्भव शब्दों को ही हिन्दी के वास्तविक तथा सच्चे शब्द मानते हैं। अतः हिन्दी की मूल प्रकृति तद्भवपरक है। कई भाषाविद तद्भव शब्दों को 'हिन्दी का मेरुदण्ड' कहते हैं। भाषाविद रामचन्द्र वर्मा का मानना है कि हिन्दी भाषा हज़ारों तद्भव शब्दों से भरी है। वास्तव में तद्भव शब्द ही हमारी अपनी असली पूँजी हैं। सभी क्रियाएँ सभी सर्वनाम, बहुत-सी संज्ञाएँ, विशेषण और क्रिया विशेषण तद्भव-रूप में ही हैं। जिसका प्रयोग लेखक ने अपने साहित्य में बहुत ही सुंदर रूप में किया है जिसका वर्णन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

देशज शब्द:- वे शब्द जो स्थानीय भाषा के शब्द होते है, ये देश की विभिन्न बोलियों से लिए जाते है, अर्थात् तत्सम शब्द को छोड़ कर, देश की विभिन्न बोलियों से आये शब्द देशज शब्द है। इन्हें आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया जाता है और ये बाद में प्रचलन में आकर हमारी भाषा का हिस्सा बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में - वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति की जानकारी नहीं है, बोल चाल के आधार पर स्वतः निर्मित हो जाते हैं, उसे देशज शब्द कहते हैं। इन्हें देशी शब्द भी कहा जाता है।

जो शब्द विदेशी भाषा के हैं, परंतु हिंदी में उन शब्दों का प्रचलन हो रहा है। ऐसे शब्द विदेशी शब्द कहे जाते हैं। विदेशी शब्द हिंदी भाषा में इस प्रकार घुल-मिल गये है कि उनको पहचानना मुश्किल है। दूसरे शब्दों में - विदेशी भाषाओं से हिंदी में

आये शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। इन विदेशी भाषाओं में मुख्यतः अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी व पुर्तगाली शामिल है। जिसका प्रयोग लेखक ने अपने साहित्य में बहुत ही सुंदर रूप में किया है जिसका वर्णन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

अध्याय के अंत में मैंने श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य की अंतर्वस्तु और शिल्प को दर्शाते हुए पुष्टि तथ्यों के साथ अंतर्वस्तु और शिल्प से संबंधित उदाहरण को प्रस्तुत किया है तथा इस अध्याय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है तथा अध्याय का समापन किया है।

इस अध्याय का समापन करने के पश्चात् मैने अपने संदर्भानुक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें इस अध्याय से संबंधित सभी पुष्टि तथ्यों के संदर्भों को मैने पृष्ठ संख्या सहित प्रस्तुत किया है।

शोध प्रबंध के इस अध्याय में ' उपसंहार ' का स्थान निर्धारित किया गया है। इस अध्याय में बेचैन के साहित्य में जिन महिला पात्रों का वर्णन है वे किन - किन परिस्थितियों, समाज के हित में उनका योगदान दिया है उनके योगदान का वर्तमान सामाजिक संदर्भों में उनका सम्यक मूल्यांकन किया गया है जिससे समाज में उनकी उपादेयता को साहित्य के क्षेत्रों देखा गया है। भारतीय साहित्य में दलित आदिवासी एवं निर्धन लोगों का वर्णन अब साहित्य की परिधि से हाशिए पर कर दिया गया है। जो संविधान एवं मानवता के लिए उचित नहीं कहा जा सकता है।

गोपुच्छवत् निश्चित रूप में होता है किन्तु संक्षिप्त होने के साथ - साथ शोध-प्रबंध का एक महत्वपूर्ण अंग भी होता है एक विषय के स्वतंत्र ग्रन्थ में “उपसंहार” की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण नही होती, पर शोध-प्रबंध में “उपसंहार” न हो तो उसे शोध-प्रबंध ही नहीं माना जा सकता। “उपसंहार” में मैंने सम्पूर्ण शोध-प्रबंध के सार-संक्षेप को रखने के उपरान्त उसकी उपादेयता, उसके महत्वपूर्ण निष्कर्ष और भविष्यत् संभावनाओं पर भी प्रकाश डालने का उपक्रम प्रस्तुत किया है।

उपजीव्य ग्रंथों की सूची।

1:- बैचेन, डॉ. श्यौराज सिंह, क्रोंच हूं मैं (काव्य संग्रह)

2. दलित शिखरों के साक्षात्कार

3. बालक श्यौराज,

4. सामाजिक न्याय और दलित साहित्य, श्यौराज सिंह।

5. श्यौराज सिंह बेचैन के काव्य, श्यौराज सिंह।

6. समाज साहित्य के प्रश्न और दलित चेतना, श्यौराज सिंह।

7. दलित प्रश्न, कविता यादव।

8. हाशिए से बाहर, श्यौराज सिंह।

9. उपन्यास साहित्य में दलित समस्या और, श्यौराज सिंह।

10. अंबेडकर गांधी और दलित पत्रकारिता, श्यौराज सिंह।

11. भोर के अंधेरे में, श्यौराज सिंह।

12. मीडिया उत्तर आधुनिक, श्यौराज सिंह।

13. दलित बचपन वेदना का विस्फोट,

14. दलित विर्मश उत्तर सदी के हिन्दी कथाकार, श्यौराज सिंह।

15. समकालीन हिंदी पत्रकारिता में दलित उपन्यास, श्यौराज सिंह।

16. चमार की चाय, श्यौराज सिंह।

17. बहिष्कृत भारत, श्यौराज सिंह।

18. गांधी हरिजन अंबेडकर जनता, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

19. मूकनायक, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

20. स्त्री विर्मश और पहली दलित शिक्षिका, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

21. हाथ तो उग ही आते हैं, श्यौराज सिंह 'बेचैन', वाणी प्रकाशन।

22. मेरी प्रिय कहानियाँ, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

23 अन्याय कोई परम्परा नही, श्यौराज सिंह 'बेचैन', मराठी में अनुदित।

24. अन्याय कोई परम्परा नही, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

25. दलित क्रांति का साहित्य, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

26. मूल खोजो विवाद मिटेगा, श्यौराज सिंह 'बेचैन', मराठी से अनुदित।

27. फूलन की बरसी, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

28. रामायण में सांस्कृतिक संघर्ष, श्यौराज सिंह 'बेचैन', अरुण कांबले, मराठी से अनुदित।

29. चिंतन की परम्परा और दलित साहित्य, श्यौराज सिंह 'बेचैन', वेद।

30. दलित चेतना श्यौराज सिंह 'बेचैन', जोगीराम, वान्या प्रकाशन।

31.मूक नायक के सौ साल और अस्मिता संघर्ष के सवाल, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

32. मीडिया और दलित, गौतम बुक सेंटर।

33. स्वराज हमारे ऊपर राज, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

34. हिन्दी की चर्चित आत्मकथाएं, , साहित्य संस्थान।

35. हिंदी दलित आत्मकथाओं में बचपन, गौतम बुक सेंटर।

36. दलित साहित्य के संदर्भ, श्यौराज सिंह 'बेचैन'।

37. मीडिया में समाजिक लोकतंत्र,श्यौराज सिंह 'बेचैन', अनामिका प्रकाशन।

38. बैचेन, डॉ. श्यौराज सिंह, कहानी संग्रह - भरोसे की बहन,

39. नई फ़सल : कुछ अन्य कविताए, श्यौराज सिंह 'बेचैन'

40. बैचेन, डॉ. श्यौराज सिंह, मेरा बचपन मेरे कंधो पर, आत्मकथा।

41. श्यौराज सिंह बेचैन, हिंदी दलित साहित्य का इतिहास: शोध और सृजन

2– सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची।

1. डॉ. वल्लभ दास तिवारी, हिन्दी काव्य में नारी

2. शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास

4:- भारत का तिल समकालीन कालीचे प्रश्न: स्त्रीवादी चर्चा विश्वाचा अठावा वंदना पलसाने, संपादक विद्युत भागवत शर्मिला रेगे, प्रकाश अत्री अभ्यास केंद्र पुणे विद्यापीठ, संस्करण-2000

5:-हिंदी साहित्य का आधा इतिहास: सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ लोधी रोड नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2003

6:- मंगल कोप्पेकर, सठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी

7:- रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां

8:- मोहन कृष्ण बोहरा, तस्लीमा के हक में

9:- आशारानी वहोरा, भारतीय नारी : दशा और दिशा

10:- मृणाल पाण्डे, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक

11:- जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श

12:- डॉ. सूर्य नारायण रणसूभे, उपलब्धि : नारीवादी या नरिमुक्ती की अवधारणा

13:- धर्मपाल : नारी एक विवेचन

14:- स. डॉ. द्वितीय मेधा तथा अन्य हिंदी महिला कथाकारों के साहित्य में नारी विमर्श, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली 2012

15:-डॉ. के. एम. मालती, नारी विमर्श:भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

16:- द्रष्टव्य : हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य राम चन्द्र शुक्ल

17. दृष्टव्य : हिंदी उपन्यास : संपादक--डॉ. सुषमा प्रियदर्शनी

18. दृष्टव्य : हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास : डॉ. पारुकान्त देसाई

19:- महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोक भारती प्रकाशन, तृतीय संस्करण 2001

20:- श्समाजशास्त्र का परिचय, डॉ. शिवभानु सिंह से उद्धरत

21:- हो है जो पुरुष रची राखा, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

22:- मुशर्रफ आलाम जौकी, कथा जगत की बागी औरतें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2006

23:- शिवरानी देवी, प्रेमचंद घर, आत्मा राम एंड सन्स, दिल्ली 1991

24:- डायलेटिकल डिस्बेसिज्वॉमन रेजिस्टेंस एण्ड रेवोल्यूशन सौजन्य अभय कुमार अतीत होती सदी और नारी का अविष्कार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

25:- 'प्रभा खेतान -बाज़ार के बीच' बाजार के खिलाफ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

26:- सुमन राजे: इतिहास में नारी, भारतीय ज्ञानपीठ, 2012

27:-राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा देहरि भई विदेश

28:- सिंह सविता एवं मिश्र आरती(2009) गांधी और समकालीन विश्व पर जागरूकता पाठ्यक्रम इग्नू नई दिल्ली

29:- डॉ. कुसुम मेघवाल -लेख दलित आंदोलन में महिलाओं का योगदान, उद्धरत मीडिया और दलित महिलाएं

45:- बस्लीम सरीन लेख- धर्म और औरत की गुलामी उद्धरत -धर्म और बर्बरता, डॉ. रंजीत, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद

30:- मैत्री पुष्प -लेख धर्म और नारी उद्धरत धर्म और बर्बरता

31:- एच एल दुशाद- सामाजिक परिवर्तन और वी. एस. पी.

32:-'नारी प्रश्नों के बीच प्रेमचंद' शम्भू नाथ, वर्तमान साहित्य जुलाई 2005

33:- कुसुम कहानी प्रेमचंद

34:- गोदान, प्रेमचंद

35:- कर्मभूमि, प्रेमचंद

36:- थोराट विमल: दलित साहित्य का नारीवादी स्वर, अनामिका पदिल शर्मा एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि. नई दिल्ली

37:- बसंती कौशल्या: दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली (1999)

38- सं. निवेदित मनन संध्या आर्य, नारीवादी राजनीतिक संघर्ष एंव मुद्दे हिंदी निदवशले

39:-औरत अस्तित्व अस्मिता- महिला लेखन का समाजशानारीय अध्ययन, अरविंद जैन, भूमिका प्रभार

40:- डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स,१९७३

41 डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, हिन्दी साहित्य: सामाजिक चेतना

42. डॉ. सौ. जे. एम. देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी

43. मैथिलीशरण गुप्त, मनुष्य और रचना, पृ. 127

44. जयशंकर प्रसाद कामायनी, पृ. 46

45. डॉ. इन्द्रनाथ मदान, आधुनिक कविता का मूल्यांकन

46. डॉ. सौ मंगल कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी (महात्मा गांधी का संदेश- यू. एस. मोहनराव-४२ से उद्धरत)

47. अनुवादक-जवेरीलाल उमाशंकर याज्ञिक, मनुस्मृति

48. मैथिलीशरण गुप्त, द्वापर, पृष्ठ संख्या - ३१

49. आशारानी व्होरा, भारतीय नारी : दशा और दिशा

3. कोश ग्रंथ।

1. हिंदी-सिंधी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश: केंद्रीय हिंदी निदेशालय शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली-110066, प्रथम संस्करण-1989

2. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश

3. डॉ. हरदेव बाहरी, वृहत अंग्रेजी - हिन्दी कोश

4. हिन्दी विश्वकोश, चतुर्थ खण्ड

5.- ज्ञान शब्दकोश:संपादक- मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, ज्ञान मंडल लिमिटेड वाराणसी, संशोधित संस्करण-1993

6. हिन्दी साहित्य कोश--भाग-१ : प्रधान संपादक - डा. धीरेन्द्र वर्मा :

7. मानक हिंदी कोश : संपादक रामचंद्र वर्मा, पहला खंड हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण -1996, द्वितीय संस्करण-1993

8.- हिंदी विश्वकोश : संपादक नगेंद्र नाथ बसु, खंड -21 बीआर पब्लिशिंग कॉरपोरेशन दिल्ली, पुनर मुद्रण-1986

9. कृ. पा. कुलकर्णी, व्युत्पत्ति कोश।

10:- भोलानाथ तिवारी, बृहद प्रयायवाची कोश।

11:- हरदेव बाहरी, हिंदी शब्दकोश

12:- सी : द कॉम्पेक्ट ऑक्सफ़ोर्ड रेफरेन्स डिक्शनरी : पी. 575

13. आप्टे वामन शिवराम, संस्कृत-हिंदी कोश, प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन दिल्ली, संस्करण-१९८८.

14. एल. डेविड, इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंस, प्रकाशक- Macmillan Reference USA, संस्करण- १९६८

15. कालिका प्रसाद, बृहद हिंदी कोष, प्रकाशक- ज्ञानमंडल लिमिटेड बनारस, संस्करण - १९९७

16. तिवारी डॉ. भोलानाथ, हिंदी प्रयायवाची कोश, प्रकाशक- प्रभात प्रकाशन,संस्करण -२०१९

17. नवलजी, नालंदा विशाल शब्दसागर, प्रकाशक - अदिशा बुक डिपो, संस्करण - २०१२.

18. पारसनस टोलकोट, एनसाइक्लोनलोपेडिया ऑफ सोशल साइंस, कोलियर मैकमिलन लंदन,वॉल.-XVI

19. प्रसाद कालिका, वृहत् हिंदी कोश, प्रकाशक- ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, संस्करण- २०१६

20. प्रकाश ओम, समाज विज्ञान कोश, प्रकाशक - PHI Learning Pvt. Ltd. संस्करण- १९८४

21. बिहारी हरदेव, वृहत् अंग्रेजी- हिंदी कोश, प्रकाशक- ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, संस्करण- १९६९

22. वर्मा रामचंद्र, मानक हिंदी कोश (पाँचवां भाग), प्रकाशक-हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, संस्करण-१९६६.

23. शर्मा चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद व झा पंडित तारिणी, संस्कृत-शब्दार्थ कौस्तुभ, प्रकाशक -लालरामनारायन लाल इलाहाबाद,संस्करण-१९७७.

24.- शुक्ल रामचंद्र, हिंदी शब्द सागर (नवां भाग),प्रकाशक-काशी-नगरी-प्रचारिणी सभा काशी, संस्करण-१९२७.

25. त्रिपाठी डॉ. राम प्रसाद, हिंदी विश्वकोश, प्रकाशक- नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, संस्करण- २०१४

26. श्रीवास्तव मुकुन्दीलाल, ज्ञान शब्दकोश, प्रकाशक - ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, संस्करण- २०१६

4– पत्र-पत्रिकाएं।

1:- हिंदुस्तानी त्रैमासिक जुलाई-सितम्बर-2016

2:- हंस पत्रिका : प्रभा खेतान, स्त्री विमर्श के अंतर्विरोध, दिसंबर-1996

3:- जापान की स्त्रियाँ, सरस्वती : संख्या-सन 1905

5:- 'वाक' अंक - ४, वर्ष २००८

6:- वसुधा दलित विशेषांक अंक 58 जुलाई सितम्बर 2003

7:- अनभै साँचा

8:- “उपन्यास” शीर्षक लेख : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : “संदेश” पत्रिका - मार्च –1940

5– इंटरनेट माध्यम।

1.www.shwetashindi.blogspot.com.

2. www.surta.in.

3.www.rachanakar.org

4.www.mpgkpdf.com

5.www.scotbuzz.org

6.-www.hindivibhag.com

7.www.wikipedia.org

8 www.google.com

9 www.collinsdictionary.com

10.www.hindiwebdunia.com

11. www.blogger.com

12. www.bharatdarshan.co.nz

13. www.zindaginama.com

14. www.hindisamay.com

15. www.deshbandhu.co.in

16. www.pustak.org

17 www.delhihomesshop.com

18. www.hindikahani.hindikavita.com

19. www.thelalantop.com

20. www.dainiktribuneonline.com

21. www.aajtak.intoday.in

22. www.wikipedia.com

23. www.gadyakosh.org

24. www.amarujala.com

25. www.bhaskar.com

26. www.easyhindivyakaran.com

27. www.blogspot.com

28. www.hindigrammar.in

29. www.hindibestnotes.com

शोधनिर्देशक

डॉ. एन.एस. परमार

शोधार्थी

प्रकाश चंद्र